('000 हैक्टेयर)

वर्ष	महाराष्ट्र	मध्य प्रदेश
1990-91	2730	608
1991-92	2724	596
1992-93 (संभावित)	2480	480

(ख) हाल ही के दशक अर्थात् 1980-81 से 1990-91 के दौरान, महाराष्ट्र और मध्य देश में कपास की खेती के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में गिरावट का रुख देखा गया है ।

(ग) किसी विशिष्ट फसल की खेती के लिए भू-संसाधनों की नियतन तुलनात्मक पैदावार, प्रतिस्पर्द्धात्मक फसलों का सापेक्ष मूल्य, किसानों की अपनी ही इच्छा तथा पारिवारिक आवश्यकताओं, मांग में वृद्धि, कृषि जलवायुवीय आदि जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है । चूंकि कपास की मांग को अन्य पैदावार के जरिए बढ़ी हुई आपूर्ति के द्वारा पूरा किया जा रहा है, अतः किसान भू-संसाधन के नियतन को कपास की खेती के लिए ही सीमित रख रहे हैं ।

(घ) सरकार का प्रमुख लक्ष्य कपास की उत्पादकता में वृद्धि करके इसके उत्पादन में बढ़ोतरी करना है । इसके लिये महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश सहित 11 प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में गहन कपास विकास कार्यक्रम (आई० सी०डी०पी०) चलाया एवं केन्द्र प्रायोजित योजनाएं चलायी जा रही हैं ।

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में गेहूं, चावल, दालों और तिलहनों का उत्पादन

1289. **श्री अजीत जोगी :**
श्री मूलचन्द मीणा :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले दो वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में गेहूं, चावल, दालों और तिलहनों का कितनी-कितनी मात्रा में उत्पादन किया गया; और

(ख) इनका उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेताम) : (क) 1991-92 और 1992-93 में मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में गेहूं, चावल, दालों और तिलहनों का उत्पादन इस प्रकार रहा :—

(उत्पादन '000 मी० टन में)

वर्ष	फसल	मध्य प्रदेश	उत्तर प्रदेश
1991-92	गेहूं	4673	20156
	चावल	5128	9104
	दलहन	2807	2515
	कुल मोटे तिलहन	2735	1386
1992-93 (सम्भावित)	गेहूं	5455	20000
	चावल	5432	9614
	दालें	3208	2592
	कुल मोटे तिलहन	3574	1260

(ख) इन फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए समेकित चावल विकास कार्यक्रम; विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम–गेहूं और दालें; राष्ट्रीय दलहन विकास कार्यक्रम; तिलहन उत्पादन कार्यक्रम आदि जैसी कई फसल उत्पादनोन्मुखी योजनाएं इन राज्यों में क्रियान्वित की जा रही हैं। इन योजनाओं के तहत, किसानों को बीजों के उत्पादन एवं वितरण, अतिसूक्ष्म पोषकतत्वों के पौध संरक्षण उपकरणों का वितरण, बीज मिनिकिटों के वितरण, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण का आयोजन आदि पर राजसहायता के रूप में प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं।

खाद्यान्नों का उत्पादन

1290. **श्री अजीत जोगी :**
श्री मूलचन्द मीणा :

क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पिछले चार दशकों के दौरान देश में खाद्यान्नों के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है;

(ख) यदि हां, तो वर्ष 1950-51 की तुलना में वर्ष 1990-91 में कितनी मात्रा में खाद्यान्नों का उत्पादन हुआ;

(ग) क्या उक्त अवधि के दौरान किसानों की आय में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई है;

(घ) यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं; और

(ङ) वर्ष 1950-51 की तुलना में वर्ष 1990-91 की तुलना में किसानों की आय कितनी थी ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेताम) : (क) जी, हां।

(ख) 1990-91 के दौरान देश में खाद्यान्न का उत्पादन 1950-51 के 50.8 मिलियन टन की तुलना में 176.4 मिलियन टन रहा।

(ग) इसी अवधि के दौरान कृषकों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

(घ) प्रश्न नहीं उठता।

(ङ) कृषि में प्रति हैक्टेयर घटक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद 1980-81 के स्थित मूल्यों पर 1950-51 में 1,757 रु० से 1990-91 में बढ़कर 4,403 रु० हो गया है।

खाद्यानों और नकद फसलों के लिए प्रयुक्त क्षेत्र

1291. **श्री अजीत जोगी** : क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले वर्ष और चालू वर्ष के दौरान देश में खाद्यान्नों और नकद फसलों की कुल कितने क्षेत्र में खेती की गई तथा इनका कितना-कितना उत्पादन हुआ था;

(ख) क्या यह सच है कि रबी के चालू मौसम के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में खाद्यान्नों की खेती कम क्षेत्र में की गई जबकि तिलहनों और अन्य नकदी फसलों की खेती अधिक क्षेत्र में हुई;

(ग) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं; और

(घ) खाद्यान्नों की खेती के लिए कृषि क्षेत्र में वृद्धि करने हेतु सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेताम) : (क) देश में वर्ष 1991-92 तथा 1992-93 के दौरान खाद्यान्नों, तिलहनों तथा अन्य प्रमुख नकदी फसलों के कुल क्षेत्र तथा उत्पादन का विवरण नीचे दिया गया है :